SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छत्तीसगढ़ में बौद्ध धर्म के विकास का ऐतिहासिक अनुशीलन

आशा चौधरी, पी.एच–डी., **एवलाल मेश्राम,** इतिहास विभाग
शास. नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोंगरगढ़ जिला–राजनांदगांव, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
आशा चौधरी, पी.एच–डी.
एवलाल मेश्राम
E-mail : ashachoudhary484@gmal.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 05/02/2025
Revised on : 06/04/2025
Accepted on : 15/04/2025
Overall Similarity : 07% on 07/04/2025

शोध सार

गौतम बुद्ध के जीवन काल में ही दक्षिण कोसल में बौद्ध धर्म का प्रवेश हो चुका था। इस क्षेत्र के राजा वीजयस के अनुरोध पर गौतम बुद्ध छत्तीसगढ़ में आए और इस क्षेत्र का गौरव बढ़ाया। सम्राट अशोक के काल में बौद्ध धर्म विस्तार हुआ। दक्षिण कोसल के शासको की धार्मिक उदारता के फलस्वरुप बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार होता रहा। दक्षिण कौशल में बौद्ध धर्म को फैलाने में दार्शनिक नागार्जुन का महत्वपूर्ण योगदान रहा। आरंग ,सिरपुर, तुरतुरिया, राजिम, मल्हार, भोंगपाल, बारसूर आदि स्थानों से बौद्ध धर्म ही संबंधित मूर्तियां ,बिहार, चौत्य मिले हैं। इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म अपने प्रारंभिक काल से अस्तित्व में आया। कलचुरियो के समय में बौद्ध धर्म का विकास रुक सा गया। आज भी छत्तीसगढ़ में लाखों की संख्या में बौद्ध अनुयायी निवास करते हैं।

मुख्य शब्द

गौतम बुद्ध, दक्षिण कोसल, विजयस, नागार्जुन, आचार्य.

प्राचीन काल में छत्तीसगढ़, दक्षिण कोसल में आता था। यहां के समाज मे नियामक तत्व के रूप में धर्म की प्रधानता है। धर्म प्राण वायु के समान है। समाज में शांति व्यवस्था बनाए रखने में धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। धर्म व्यक्तियों को कर्तव्यनिष्ठ बनता है। कर्तव्य निष्ठ नागरिक किसी भी देश के विकास के कुंजी होते हैं। धर्म के क्षेत्र में ई. पूर्व. छठी शताब्दी में बौद्ध धर्म का अभ्युदय एक क्रांति थी। यह वैदिक कर्मकांड के विरुद्ध प्रतिक्रिया तथा उपनिषद द्वारा प्रारंभ किए गए आंदोलन का तार्किक प्रतिफल था

बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध थे। बचपन से ही सिद्धार्थ चिंतनशील प्रवृत्ति के थे। वे दुःखो से छुटकारा पाने के उपाय सोचने लगे थे। सिद्धार्थ 29 वर्ष की

अवस्था में वृहत त्याग ज्ञान प्राप्त करने सर्वप्रथम अलार कालम नामक आचार्य का आश्रय लिया। उसके बाद में राम पुत्र नमक आचार्य के पास गये। उरुर्वेल के पांच कौडिल्य साधकों के साथ घोर तपस्या की पर जब उन्हें ज्ञान प्राप्ति नहीं हुई तत्पश्चात् सिद्धार्थ गया पहुंचे। निरंजना नदी तट पर पीपल वृक्ष के नीचे समाधि लगाई। समाधि के आठवें दिन वैशाख पूर्णिमा को उन्हें ज्ञान का प्रकाश मिला। बुद्धत्व प्राप्त करने के अनतंर अपनी आयु का प्रत्येक क्षण को लोक हित कल्याणार्थ समर्पित किया। गौतम बुद्ध ने अपने अनुयायियों को लेकर सारनाथ में संघ की स्थापना की। अपने अनुयायियों को आदेश दियाः– भिक्षुओं बहुजन हितार्थ ,बहुजन सुखार्थ, लोक पर अनुकंपा करने के लिए, हित के लिए, सुख के लिए, विचरण करो।

गौतम बुद्ध ने अपने धर्म की आधारशिला मगध में रखी थी, किंतु बौद्ध धर्म की वास्तविक प्रगति कोसल राज्य में हुई। दक्षिण कोसल के राजा विजयस, भगवान बुद्ध, प्रसन्नजित और अजात शत्रु के समकालीन थे। इसका वर्णन हमें महावंश स्थिवर गाथा पथ बुद्धजी श्रीलंका का इतिहास महावंश में मिलता है। ई. पूर्व. छठी शताब्दी में गौतम बुद्ध की जीवनकाल की एक घटना का उल्लेख अवदान शतक में मिलता है। इसमें उत्तर कोसल के शासक (प्रसन्नजीत) तथा दक्षिण कोसल (छत्तीसगढ़) के शासक के मध्य युद्ध आरंभ होने पर, महात्मा बुद्ध को दोनों में मध्यस्थता करने के लिए, दक्षिण कोसल की राजधानी श्रीपुर जाना पड़ा। युद्ध शांत होने के बाद दक्षिण कोसल के शासक के अनुरोध पर गौतम बुद्ध वहां निवास किया। यहां यह भी उल्लेखित है कि दक्षिण कोसल के शासक ने महात्मा बुद्ध को 1000 वस्त्र खंड भेट किया।

कलिंग युद्ध (261 ई. पूर्व) में दक्षिण कोसल ने अशोक का साथ दिया था। मौर्य प्रभाव में मौर्यकाल में बौद्ध धर्म का प्रचार छत्तीसगढ़ में हुआ। मौर्यकालीन पुरातात्विक अवशेष छत्तीसगढ़ में प्राप्त हुए हैं। मौर्य के समय के दो अभिलेख सरगुजा जिले में रामगढ़ पहाड़ी की दो गुफाओं से पाली भाषा में मिले हैं। उसी लिपि में सक्ति के दामोदरहा नामक प्राकृतिक कुंड में भी लेख प्राप्त हुए हैं। मौर्यकालीन ब्राहि लिपि वाले अभिलेख आरंग से प्राप्त हुए हैं। सीताबेंगरा मौर्य काल की नाट्यशाला है। सरगुजा में रामगढ़ के पास अशोक का लाट प्राप्त हुआ है। छत्तीसगढ़ में ढाढरी, अकलतरा, तारापुर आदि स्थानों से ताँबा तथा चाँदी की आहत मुद्राये प्राप्त होती है। इनमें अनेक मुद्राओं पर मयूर का अंकन प्राप्त है। इतिहासकारों का मत है कि, मयूर चिन्हाकित मुद्राओं का संबंध मौर्य शासको से है। चीनी यात्री हेंसांग की यात्रा विवरण से यह पता चलता है कि मौर्य सम्राट अशोक ने दक्षिण कोसल की राजधानी में स्तूप का निर्माण करवाया था। मौर्य प्रभाव से मौर्य काल में बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ। छत्तीसगढ़ में आरंग, सिरपुर, तुरतुरिया, राजिम, मल्हार, भोगंपाल आदि स्थानों से बौद्ध धर्म से संबंधित मूर्तियां, बिहार,चौत्य मिले हैं। रायपुर जिले की तुरतुरिया नामक स्थान में बौद्ध भिक्षुणियों के लिए बिहार थे। यहां पर गौतम बुद्ध की विशाल मूर्ति अभी भी विद्यमान है। इस स्थान पर अभी तक स्त्रिया ही पुजारीन होती है।

छत्तीसगढ़ के क्षेत्र में सर्वप्रथम मठ एवं बिहार बनाने का उल्लेख पांडुवंशी शासक महाशिवगुप्त वाला अर्जुन के मल्हार ताम्रपत्र में कोरदेवी की पत्नी अलका द्वारा तरडशंक भोग में बिहार तथा बौद्धसंघ को कैलाशपुर नामक गांव दान में दिये जाने का उल्लेख है।

राजीव लोचन मंदिर में किसी अनिर्दिष्ट स्थान से अतीत में यहां लाई गई भूमि स्पर्शी आसन में गौतम बुद्ध की एक मूर्ति है। दिलचस्प बात यह है कि यहां के स्थानीय लोग इस मूर्ति को राजा जगतपाल के रूप में पूजा करते हैं।

सिरपुर उत्खनन से बौद्ध धर्म से संबंधित दो बिहार प्रकाश में आए हैं। इनमें से एक बिहार अपनी भू– योजना के कारण स्वस्तिक बिहार कहलाता है। दूसरे बिहार को आनंद प्रभु कुटी बिहार कहते हैं। दोनों बिहार ईटों से निर्मित है। गौतम बुद्ध की विशाल प्रतिमा चंद्रासन पर आसीन, भूमि स्पर्श मुद्रा प्रतिमा प्राप्त हुई है। आनंद प्रभु नाम के बौद्ध भिक्षु ने महाशिवगुप्त के राज्य काल में एक बौद्ध मठ बनवाया। पधपाणि और ब्रज पाणि, गौतम बुद्ध के दो शिष्य थे। इनकी प्रतिमा भी मिली है। गंधेश्वर मंदिर के ऊपर बाएं से दक्षिणवर्त मंदिर परिसर में गौतम बुद्ध की मुक्त प्रतिमा है।

चीनी यात्री हेन्सांग की यात्रा विवरण से ज्ञात होता है कि, छत्तीसगढ़ में बौद्ध धर्म भी लोकप्रिय था। संपूर्ण क्षेत्र में लगभग 100 से अधिक बौद्ध बिहार थे। यहां 10000 से अधिक बौद्ध भिक्षु रहते थे। यह सभी महायान शाखा के थे। सातवाहन शासको के मित्र, प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक, शुन्यवाद के प्रवर्तक नागार्जुन सिरपुर में रहते थे। नागार्जुन की गणना प्रख्यात बौद्ध विद्वान, लेखक के रूप में होती है। नागार्जुन के प्रभाव स्वरूप छत्तीसगढ़ में बौद्ध धर्म की लोकप्रियता अपनी चरम उत्कर्ष पर थी एवं श्रीपुर महायान धार्मिक तीर्थ ही नहीं, शिक्षा के केंद्र के रूप में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त था।

बस्तर क्षेत्र में राज्य करने वाले नागवंशी शासको के काल से संबंधित भोंगपाल से बुद्ध प्रतिमाएं तथा स्तूप को अवशेष प्राप्त हुए हैं। एक वियावान जंगल में कुछ ढ़हें हुए, ईंटों में आच्छादित टीले व मूर्तियां प्राप्त हुई है। दो टीले धस्त बौद्ध बिहार तथा गौतम बुद्ध की मूर्ति पांचवी सदी की है। इससे ज्ञात होता है कि, इस समय तक बस्तर में भी बौद्ध धर्म का प्रचार हो चुका था। बारसूर के बाराखंबा मंदिर के गर्भ गृह प्रवेश द्वार के ऊपर बुद्ध की प्रतिमा प्राप्त हुई है।

छत्तीसगढ़ के मल्हार से जातक कथाओं से युक्त स्तंभ, बौद्ध धर्म की प्रतिमाएं, मठ के अवशेष प्राप्त हुए हैं। समीपवर्ती जैतपुर से एक मालगुजार के यहां भवन भित्ति में गौतम बुद्ध की प्रतिमा स्थापित है। नारायणपुर के दसवीं सदी के सुंदर शिव मंदिर के पीछे की स्थल से भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा खुदाई की गई। वहां से बड़ी संख्या में मूर्तियां और कलाकृतियां मिली जिसमें गौतम बुद्ध की अर्थ मूर्ति प्राप्त हुई है। कलचुरी शासक जाजल्य देव और पृथ्वी देव द्वितीय के सामंत वल्लभ राजा द्वारा, मठ (बिहार) बनाने का उल्लेख मिलता है। अक्षेभय गौतम बुद्ध की प्रतिमा पचराही (कवर्धा) से खंडित प्राप्त हुई है। बौद्ध देवी तारा की बहु अलंकृत एवं कलात्मक से परिपूर्ण प्रतिमा कमल पर ललितासन में विराजमान है जो खैरागढ़ के वि.वि.संग्रहालय में सुरक्षित है। ध्यानी बुद्धि की मूर्ति राजमहल कवर्धा में थी।

छत्तीसगढ़ में बौद्ध मंदिर सरगुजा जिले के मैनपाट में दर्शनी है। इस बौद्ध मंदिर में तिब्बतियों के विवाह एवं विभिन्न पर्व मंदिर में संपन्न होते हैं। मैनपाट स्थित बौद्ध मंदिर परंपरागत बौद्ध वास्तु कला के अनुसार ही निर्माण किया गया है। यह स्थल पर्यटन के लिए आकर्षण का केंद्र है। मैनपाट आदिवासी और तिब्बतियों की संस्कृति का मिलन स्थल है।

छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले के डोंगरगढ़ में प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ स्थल है। समुचे देश में अंतरराष्ट्रीय बौद्ध तीर्थ स्थल बन गया है। इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के अनुयाई बहुतायत में निवास करते हैं। प्रज्ञागिरि पहाड़ी पर स्थित 500 मीटर ऊंची काली काली चट्टानों के मध्य 22 फीट ऊंचे चबूतरे पर निर्मित 30 फीट विशालकाय गौतम बुद्ध की प्रतिमा ध्यान मुद्रा में स्थापित है। 6 फरवरी 1993 को तथागत की प्रतिमा स्थापित किया गया था। प्रतिवर्ष स्थापना दिवस पर विशाल अंतर्राष्ट्रीय मेले का आयोजन होता है। स्थापना दिवस पर विश्व की विभिन्न देश जापान, थाईलैंड, श्रीलंका ,तिब्बत एवं बौद्ध राष्ट्रो के बौद्ध भिक्षु के अलावा छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र ,मध्य प्रदेश एवं अन्य प्रांतो से हजारों की संख्या में बौद्ध धर्म के अनुयाई हर साल यहां पहुंचते हैं। छत्तीसगढ़ में प्राचीन बौद्ध केंद्र सिरपुर के बाद प्रज्ञागिरी एक बहुत बड़ा तीर्थ एवं पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित होते जा रहा है।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ से बौद्ध धर्म का संबंध गौतम बुद्ध के दक्षिण कोसल आने के साथ प्रारंभ होता है। उसके पश्चात अशोक ने भी इस क्षेत्र में बुद्ध के संबंध को पुर्नस्थापित किया जिससे जुड़े महत्वपूर्ण साक्ष्य प्राप्त होते है। सिरपुर नगर बुद्ध काल में प्राचीन इतिहास व स्मारकों कि दृष्टि से एक समृद्ध विरास्त है। हेन्सांग ने अपने यात्रा विवरण में दक्षिण कोसल में बौद्ध धर्म का वर्णन किया है। दक्षिण कोसल में लम्बें समय तक बुद्ध धर्म का प्रभाव था। बौद्ध संस्कृति इस क्षेत्र में खुब फलीभुत हुई। छत्तीसगढ के सभी दिशाओं में बौद्ध धर्म से जुड़े हुऐ स्थल व अवशेष प्राप्त होते है। बौद्ध धर्म को मानने वाले अनुयायी लाखों की संख्या में निवास करते है।

संदर्भ सूची

1. बेहार, रामकुमार (2009) *छत्तीसगढ़ का इतिहास,* छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृ. 21–287।
2. राय, कौलेश्वर (2007) *प्राचीन भारत,* किताब महल, संस्करण –5, इलाहाबाद, पृ. 127–128।
3. मित्तल, ए.के. (2018) *इतिहास,* साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा, पृ. 63।
4. वर्मा, भगवान सिंह (1995) *छत्तीसगढ़ का इतिहास,* छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृ. 19–215।
5. जैन, संजीव (2017) *प्राचीन भारतीय संस्कृति,* कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, पृ. 173।
6. दहीभाते, ए.सी. (2023) *इतिहास,* रामप्रसाद एंड संस, भोपाल, पृ. 79।
7. परिहार, दिनेश नंदिनी (2016) *प्राचीन छत्तीसगढ़ का सामाजिक, आर्थिक इतिहास,* प्रथम संस्करण, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृ. 33–134।
8. छत्तीसगढ़ के मंदिर, यात्रा दर्शिका, छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल छत्तीसगढ़ (2016), पृ. 15–64।

****